International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(5): 10-13
Received: 16-03-2023
Accepted: 17-04-2023

दीपा चतुर्वेदी
शोध छात्रा शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष शिक्षा, श्रीयुत्त स्नातकोत्तर कालेज, गंगेव, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
दीपा चतुर्वेदी
शोध छात्रा शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

दीपा चतुर्वेदी, डॉ. रंजना तिवारी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित अनूपपुर जिले के सभी विकासखण्डों से 8–8 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 640 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया किया गया है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत मध्यमान 57.28 है तथा मानक विचलन 14.36 है और शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.24 है तथा मानक विचलन 15.08 है। शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालकों का अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत मध्यमान 58.22 है तथा मानक विचलन 18.34 है और बालिकाओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत मध्यमान 58.63 है तथा मानक विचलन 18.67 है।

कुटशब्दः अनूपपुर जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, विद्यार्थी, अधिगम स्तर, बालक एवं बालिकाएँ

1. प्रस्तावना
शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।
शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का आधार है। बाल्यावास्था में प्राप्त शिक्षा का प्रभाव शेष जीवन में बना रहता है। बालक बड़ा होकर सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक क्षेत्रों मे अपनी तथा राष्ट्र की प्रगति का कर्णधार बन जाता है इसलिए शिक्षा को "माँ" के समान हितकारी माना जाता है। शिक्षा माता के समान पालन–पोशण करती है, पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यो मे लगाती है तथा पत्नी की भॉति सांसारिक चिंताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाष चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। हम देष में रहें अथवा विदेष मे शिक्षा प्रत्येक स्थान पर हमारी सहायता करती है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाष पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य के अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भॉति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अंधकार मे डूबा रहता है।
यह शिक्षा सामान्यतः कथा 1 से 5 तक की शिक्षा कहलाती है, जिसका कार्यकाल 5 वर्ष का होता है और इसके अन्तर्गत पढ़ना, लिखना अथवा अंकगणित की शिक्षा प्रदान करना है। अनौपचारिक रूप से प्राथमिक शिक्षा बालकों को परिवार में प्राप्त होती है। दैनिक जीवन के व्यवहार इत्यादि से अवगत कराकर प्राथमिक शिक्षा की नींव पर ही शिक्षा का विशाल प्रासाद खड़ा होता है।
कोठारी आयोग (1964–66) में शैक्षिक अवसरों की समानता पर बल, अपव्यय तथा अवरोधन में कमी हेतु सुझाव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 द्वारा ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड का शुभारम्भ किया गया। प्राथमिक शिक्षा की प्रगति हेतु आश्रम विद्यालय, मध्यान्ह भोजन योजना, सर्व शिक्षा अभियान, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षा गारण्टी योजना, छात्रवृत्ति, मुफ्त पोशाक एवं पुस्तकें तथा अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किये जा रहे हैं, जिससे प्राथमिक शिक्षा में वृद्धि होती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल अनूपपुर जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक

शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। स्वतन्त्र भारत में प्राथमिक शिक्षा के मार्ग में कई समस्याएँ तथा अवरोध हैं और ये अवरोध शहरी, ग्रामीण, बालक तथा बालिकाओं से भी सम्बन्धित हैं। प्राथमिक शिक्षा को अवरुद्ध करने में पारिवारिक आर्थिक स्थिति, राष्ट्रीय राजनीति, ग्राम एवं शहरी क्षेत्र तथा लैंगिकता आदि की भूमिका महत्वपूर्ण है।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला अनूपपुर है। इसके अन्तर्गत 4 विकासखण्ड – अनूपपुर, पुष्परागढ़, जैतहरी व कोतमा है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अनूपपुर जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 8–8 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

आंकड़े प्राप्त करने हेतु प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक और बालिकाओं के अधिगम स्तर ज्ञात करने के लिए पिछले वर्ष के वार्षिक परीक्षाफल के आधार पर अध्ययन किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित अनूपपुर जिले के सभी विकासखण्डों से 8–8 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 640 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कपिल, एच.के. (1996)[2], खुल्लर, के.के. (1988)[3], कौल, लोकेश (1998)[4], तिवारी, डॉ.(श्रीमती) रंजना (2016)[5], पाठक, पी.डी. (1998)[6], सिंह, सोना एवं डॉ. जय सिंह (2019)[7], जड़िया, कमलेश कुमार एवं जय सिंह (2019)[8] एवं मिश्र भागवत प्रसाद (2004)[9]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

मध्यप्रदेश अनूपपुर जिला 15 अगस्त 2003 को नया जिला बना हैं। सम्पूर्ण विश्व के मानचित्र पर इस जिले की स्थिति 22°07′ से 23°25′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°10′ से 82°10′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से अनूपपुर जिले का क्षेत्रफल 3669 वर्ग कि.मी. है। जिले के अन्तर्गत कुल तहसीलों की संख्या 04 है – पुष्पराजगढ़, अनूपपुर, जैतहरी व कोतमा है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक 1 : ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		320	320
मध्यमान (M)		57.28	61.24
मानक विचलन (D)		14.36	15.08
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		3.40	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$DF = (N_1-1) + (N_2-1)$
$DF = (16-1) + (16-1) = 15 + 15 = 30$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम स्तर से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत मध्यमान 57.28 है तथा मानक विचलन 14. 36 है और शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत मध्यमान 61.24 है तथा मानक विचलन 15.08 है।

638 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 3.40 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्र. 1 निरसित होती है।

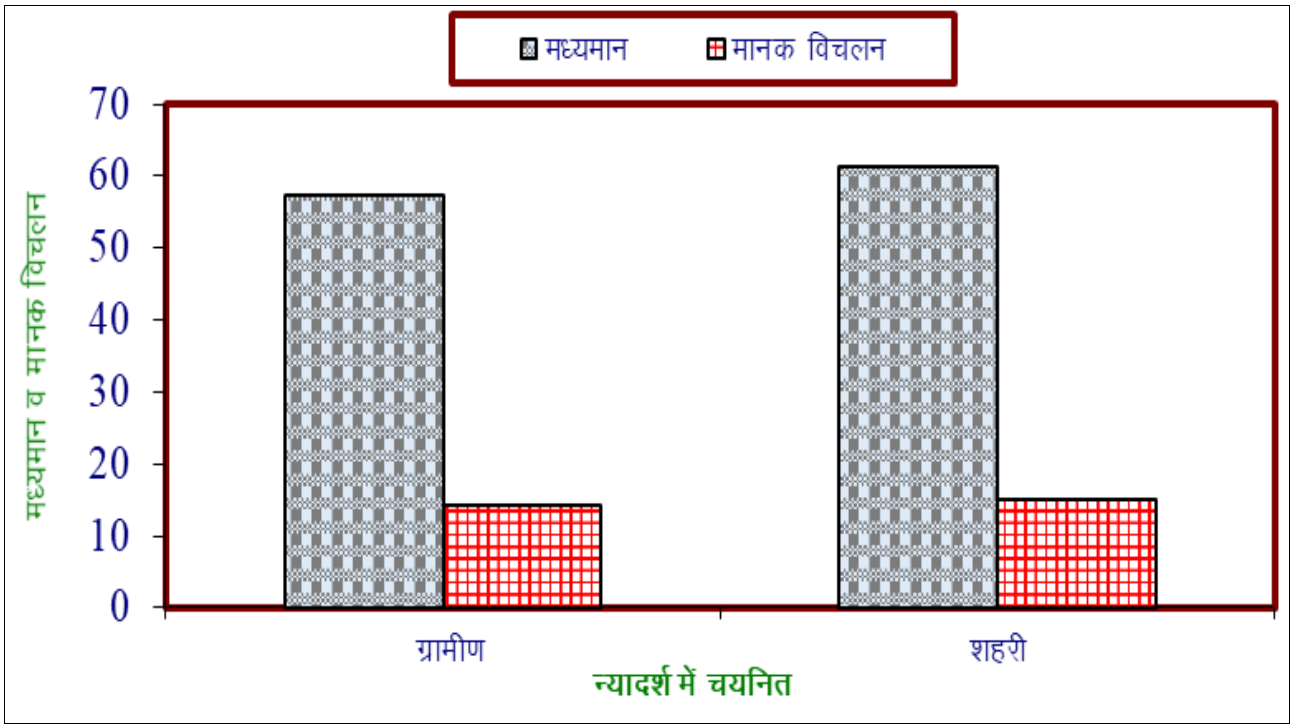

आरेख क्र. 1 : ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पना क्र. 2 : "शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक 1 : शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		बालक	बालिकाएँ
समूह की संख्या (N)		320	320
मध्यमान (M)		58.22	58.63
मानक विचलन (SD)		18.34	18.67
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.28	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

$DF = (N_1-1) + (N_2-1)$

DF = (320-1) + (320-1) = 319 + 319 = 638

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालकों का अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत मध्यमान 58.22 है तथा मानक विचलन 18.34 है और बालिकाओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत मध्यमान 58.63 है तथा मानक विचलन 18.67 है।

638 df पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 0.28 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

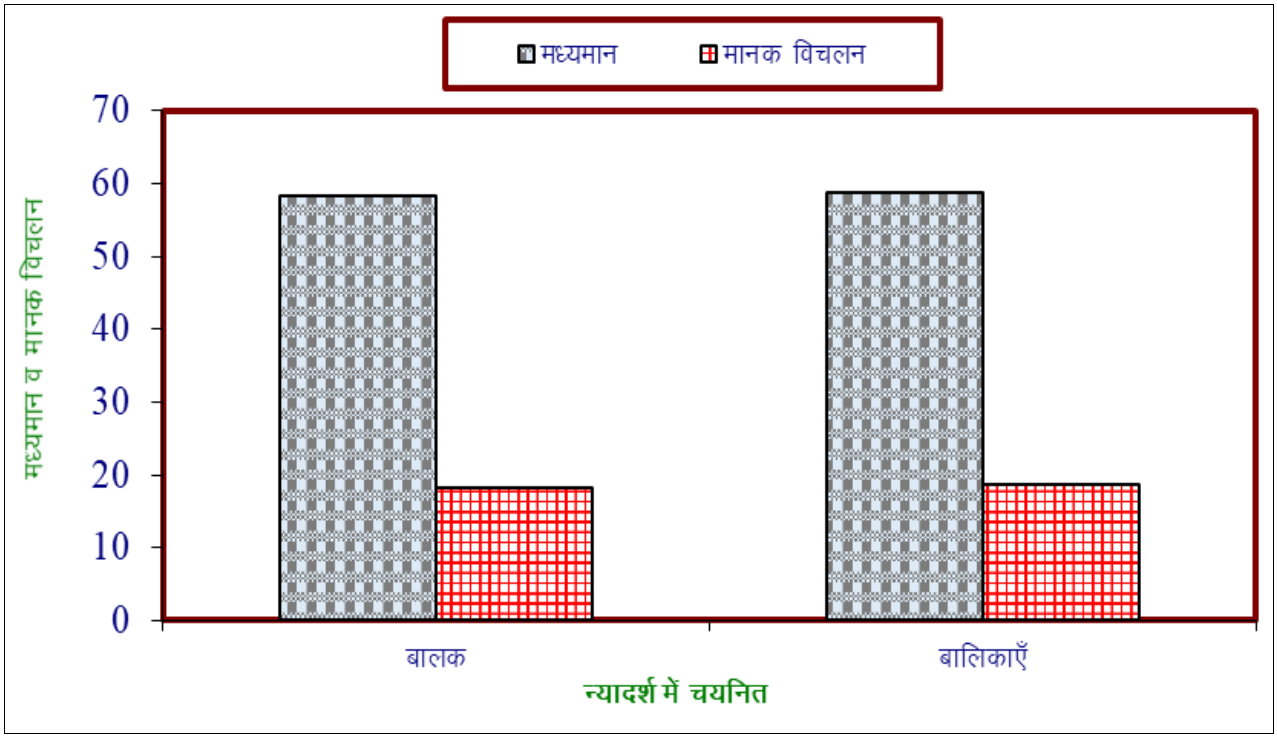

आरेख क्र. 2 : शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालक व बालिकाओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सार्थक अन्तर है और साथ ही प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्यनरत बालक और बालिकाओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

12. संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं षिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. खुल्लर, के.के. (1988) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
4. कौल, लोकेश (1998) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली.
5- तिवारी, डॉ. (श्रीमती) रंजना (2016) : "रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में हाई स्कूल में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत का विश्लेषणात्मक अध्ययन" Research Expo International Multidisciplinary Research Journal. 2016 Jan ;4(1):69-77.
6. पाठक, पी.डी. (1998) : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
7- सिंह, सोना एवं डॉ. जय सिंह (2019) : "अनूपपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Research and Development. 2019 Mar;4(2):63-65.
8- जड़िया, कमलेश कुमार एवं जय सिंह (2019) : "छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Research and Development. 2019 Mar;4(2):69-71.
9. मिश्र भागवत प्रसाद (2004) : रीवा संभाग में बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा की प्रभावशीलता का समीक्षात्मक अध्ययन। अप्रकाशित शोध ग्रंथ, शिक्षा अ.प्र.सि.वि.वि. रीवा।